Vijay Kumar Jha
Assst Prof
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar

Degree Part II

Relations of India with other Asian Countries

प्राचीन इतिहासकारों का मत था कि प्राचीन काल में भारत का संबंध अन्य देशों से नहीं था किन्तु नवीनतम शोधों से यह ज्ञात होता है कि भारतीयों ने सुदूर प्रदेशों कि यात्रा कर विदेशों में राजनीतिक व्यापारिक तथा सांस्कृतिक केन्द्रों कि स्थापना की और एक बृहत्तर भारत का निर्माण किया। सिंधु सभ्यता के अवशेषों से भी स्पष्ट होता है कि भारतीयों का अन्य देशों के साथ सम्बन्ध थी। सिकन्दर कि आक्रमण और मौर्य साम्राज्य कि स्थापना से भारत का यूनान एवं ईरान से संबंध कि जानकारी मिलती है। मौर्य दरबार में यूनानी राजदूतों कि उपस्थिति इस बात कि पुष्टि करता है।

(1) व्यापारिक कारण — भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार का मुख्य कारण व्यापार था। व्यापार के क्रम में भारतीय अन्य देशों कि यात्रा किया जिससे भारतीय संस्कृति इन देशों में फैला। वहाँ कई भारतीय व्यापारिक केन्द्र बन गया। इसमें चीन, यूनान और ईरान प्रमुख था। क्रमशः ये व्यापारिक सम्बन्ध सांस्कृतिक सम्बन्ध में बदल गये। व्यापारियों ने अनेक स्थानों का नाम भारतीय नामो के आधार पर रखा जैसे चम्पा, द्वारावती आदि।

(2) धार्मिक कारण :— भारत में कई ऐसे धर्माचार्य हुए जिन्होंने अपने धर्म कि प्रचार करने के लिये स्वयं अथवा दूत विदेश भेजे जिसमें अशोक, कनिष्क एवं बुद्ध का नाम आता है। बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने श्रीलंका, अफगानिस्तान, चीन, जापान, इंडोनेशिया, श्याम आदि देशों कि यात्रा कि। वैष्णव और शैव धर्मावलम्बी भी पूर्वी और दक्षिण एशिया में धर्म प्रचार किया। फलतः अनेक देश भारतीय संस्कृति के प्रभाव में आ गये।

(3) साम्राज्यवादी कारण :— प्राचीन कालीन राजाओं में साम्राज्य विस्तार करने कि महत्वाकांक्षा होती थी। इसी उद्देश्य के लिये

JUNE 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Scanned with Can

(2)

प्राचीन कालीन राजे अन्य देशों में आक्रमण करके उन्हें अपना प्रभाव क्षेत्र में लिया। कनिष्क ने अपने साम्राज्य क्षेत्र को खोतान और चीनी तुर्किस्तान तक बढ़ाया। स्रोतों से कम्बोडिया की स्थापना भारतीय ब्राह्मण द्वारा करने का उल्लेख मिलता है। चोल शासकों ने श्रीविजय पर आक्रमण किया था। इससे श्रीलंका एवं भारतीय सम्बन्ध ज्ञात होता है।

प्राचीन काल में भारतीयों का विचार था कि दक्षिण एशिया में सोने कि खान है जिस कारण मलाया, जावा सुमात्रा का नाम स्वर्ण भूमि पड़ा था। भारतीय लोग वहाँ व्यापारिक कारणों से जाते थे। क्रमशः ये प्रदेश भारतीय उपनिवेश बन गये।

(I) चम्पा — प्राचीन काल में भारतीयों ने हिंद चीन में चम्पा नामक राज्य कि स्थापना किया था आधुनिक काल में उसे अन्नाम कहा जाता है। चम्पा में द्वितीय सदी में श्रीमार नामक राजवंश कि स्थापना हुई थी वहाँ अनेक हिंदू मन्दिर एवं बौद्ध स्तूप मिला है।

(II) कम्बोडिया : — कम्बोज अथवा कम्बोडिया को चीनी फुनान कहते हैं कम्बोडिया कि स्थापना कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण ने किया था यहाँ भारतीय सभ्यता का विकास तीव्र गति से हुआ। यहाँ के अनेक नाम भारतीय नामों के आधार पर है — विक्रमपुर, ध्रुवपुर तथा ताम्रपुर। यहाँ शैव एवं वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ। अंगकोरवाट के मंदिर के दिवाल पर संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है। रामायण के चौपाई से यहाँ कि दिवारें सुसज्जित है।

(III) जावा — जावा भारत का एक प्रमुख उपनिवेश है। भारतीयों ने प्रथम शताब्दि में इस राज्य कि स्थापना किया था। जावा में हिंदू धर्म प्रचलित था जैसा कि फाह्यान ने वर्णन किया है जावा में बौद्ध धर्म प्रचलित था और यहाँ कई महात्मा बुद्ध के प्रतिमाये मिली है। जावा कि कला पर भारतीय कला कि छाप है। यहाँ भारतीय संस्कृत के नमूने के तौर पर कई मंदिर एवं स्तूप प्राप्त हुये हैं। जावा के प्रसिद्ध बोरोबुदूर स्तूप है।

(IV) सुमात्रा : — सुमात्रा कि स्थापना भारतीय द्वारा पाँचवी सदी में हुई थी यहाँ बौद्ध धर्म प्रचलित था। चीनी यात्री इत्सिंग सुमात्रा कि यात्रा दो बार किये थे।

(V) मलाया : — कौण्डिन्य नामक व्यक्ति ने छठवीं सदी में यहाँ

Scanned with Cam

भारतीय साम्राज्य कि स्थापना किया था। यहाँ बौद्ध एवं ब्राह्मण धर्म प्रचलित था। यह एक सम्पन्न देश था। गुप्त और पल्लव कालीन कला के द्वारा यहाँ मन्दिर और स्तूप का निर्माण हुआ था।

(vi) श्याम :— श्याम को आधुनिक युग में थाईलैण्ड कहा जाता है। श्याम में बौद्ध धर्म प्रचलित थे

(vii) बालि :— यह सुदूर पूर्व में एक भारतीय उपनिवेश था जिसपर भारतीय संस्कृत का गहरा प्रभाव था यहाँ भारतीय देवता शिव, गणेश इन्द्र कि पूजा होती थी।

(vii) बोर्नियो — बोर्नियो में भारतीय उपनिवेश कि स्थापना चतुर्थ सदी में हुई थी बोर्नियो से प्राप्त हिन्दु देवी देवताओं कि मूर्तियाँ भारतीय संस्कृत के प्रभाव प्रमाणित करती है।

(viii) बर्मा :— अशोक ने अपने अनुचरों को बौद्ध धर्म कि प्रचार के लिये बर्मा भेजा था जिससे बर्मा में बौद्ध धर्म कि स्थापना हुई। वहाँ अनेक, चैत्य, विहार तथा स्तूपों कि स्थापना हुई

(ix) श्रीलंका — श्री लंका एवं भारत का सम्बन्ध अति प्राचीन काल से रहा है। राम द्वारा रावण को पराजित किये जाने का उल्लेख मिलता है। अशोक ने तीसरी सदी ई० पू० में अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म प्रचार के लिये श्रीलंका भेजा था जिसके कारण श्री लंका में बौद्ध धर्म कि स्थापना हुई। बौद्ध धर्म श्रीलंका का प्रमुख धर्म बन गया।

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे देश थे जिसपर भारतीय संस्कृति का गहरी छाप थी जैसे — अफगानिस्तान, ईरान, तिब्बत, चीन कोरिया, जापान, यूनान एवं रोम। यहाँ आज भी भारतीय शिल्प कला, धर्म एवं भाषा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

अधिक दिनों तक भारतीयों का यह प्रभाव वृहत्तर भारत में कायम नहीं रह सका और विभिन्न कारणों से वृहत्तर भारत का पतन हो गया। जिसका मूल कारण भारत पर तुर्क आक्रमण था जिसने भारतीय संस्कृत को कुचल डाला।

JUNE 2019
Su Mo Tu We Th Fr Sa